❍ 30 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗मुख से ज्ञान रतनो का दान किया ?∗

➢➢ ∗कांटो को फोल बनाने की सेवा की ?∗

➢➢ ∗प्रतक्ष्यता और प्रतिज्ञा के बैलेंस द्वारा सर्व को बाप की ब्लेस्सिंग प्राप्त करवाई ?∗

➢➢ ∗स्मृति विस्मृति के युद्ध में समय तो नहीं गया ?∗

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ ∗कर्मातीत का अर्थ ही है-सर्व प्रकार के हद के स्वभाव-संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारा। हद है बन्धन, बेहद है निर्बन्धन।∗ ब्रह्मा बाप समान अब हद के मेरे-मेरे से मुक्त होने का अर्थात् कर्मातीत होने का अव्यक्ति दिवस मनाओ। इसी को ही स्नेह का सबूत कहा जाता है।

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं अविनाशी बाप के बगीचे का अविनाशी रूहानी गुलाब हूँ"*

〰✧ *सदा अपने को बाप के रूहानी बगीचे के रूहानी गुलाब समझते हो! सबसे खुशबू वाला पुष्प 'गुलाब' होता है। गुलाब का जल कितने काया में लगाते हैं, 'रंग-रूप' में भी गुलाब सर्व प्रिय है। तो आप सभी रूहानी गुलाब हो।* आपकी रूहानी खुशबू औरों को भी स्वत: ही आकर्षण करती है।

〰✧ *कहाँ भी कोई खुशबू की चीज होती है तो सबका अटेन्शन स्वत: ही जाता है तो आप रूहानी गुलाबों की खुशबू विश्व को आकर्षित करने वाली है, क्योंकि विश्व को इस रूहानी खुशबू की आवश्यकता है।*

〰✧ *इसलिए सदा स्मृति में रहे कि -'मैं अविनाशी बगीचे का अविनाशी गुलाब हूँ।' कभी मुरझाने वाला नहीं। सदा खिला हुआ। ऐसे खिले हुए रूहानी गुलाब सदा सेवा में स्वत: ही निमित्त बन जाते हैं।* याद की, शक्तियों की, गुणों की यह सब खुशबू सबको देते रहो। स्वयं बाप ने आकर आप फूलों को तैयार किया है तो कितने सिकीलधे हो!

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ साइलेन्स की शक्ति को अच्छी तरह से जानते हो? *साइलेन्स की शक्ति सेकण्ड में अपने स्वीट होम, शान्तिधाम में पहुँचा देती है।* साइंस वाले तो और फास्ट गति वाले यंत्र निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन *आपका यंत्र कितनी तीव्र गति का है!* सोचा और पहुँचा। ऐसा यंत्र साइंस में हैं जो इतना दूर बिना खर्च के पहुँच जाएँ?

〰✧ वो तो एक-एक यंत्र बनाने में कितना खर्च करते है, कितना समय और कितनी एनर्जी लगाते हैं, आपने क्या किया? बिना खर्चे मिल गया। *यह संकल्प की शक्ति सबसे फास्ट है।* आपको शुभ संकल्प का यंत्र मिला है, दिव्य बुद्धि मिली है। शुद्ध मन और दिव्य बुद्धि से पहुँच जाते हो। *जब चाहो तब लौट आओ, जब चाहो तब चले जाओ।*

〰✧ साइंस वालों को तो मौसम भी देखनी पडती है। आपको तो यह भी नहीं देखना पडता कि आज बादल है, नहीं जा सकेंगे। आजकल देखो - बादल तो क्या थोडी-सी फागी भी होती है तो भी प्लैन नहीं जा सकता। और *आपका विमान एवररेडी हैं या कभी फागी आती है?* एवररेडी है? सेकण्ड में जा सकते हैं - ऐसी तीव्र गति है? *माया कभी रुकावट तो नहीं डालती है?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ बंधनों की लम्बी लिस्ट वर्णन करते हो, क्लासेज कराते हो तो बंधनों की बड़ी लम्बी लिस्ट निकालते हो *लेकिन बाप कहते हैं सब बन्धनों में पहल एक बंधन है-देह भान का बंधन। उससे मुक्त बनो। देह नहीं तो दूसरे बंधन स्वत: ही खत्म हो जायेंगे।* अपने को वर्तमान समय मैं टीचर हूँ, मैं स्टूडेंट हूँ मैं सेवाधारी हूँ, इस समझने के बजाए *अमृतवेले से यह अभ्यास करो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा ऊपर से आई हूँ'- इस पुरानी दुनिया में, पुराने शरीर में सेवा के लिए। मैं आत्म हूँ-यह पाठ अभी और पक्का करो।* आप आत्मा का भान धारण करो तो यह आत्मिक भान, माया के भान को सदा के लिए समाप्त कर देगा। लेकिन आत्मा का भान - यह अभी चलते फिरते स्मृति में रहे, वह अभी और होना चाहिए। *ब्रह्म बाप ने आत्मा का पाठ आदि से कितना पक्का किया! दीवारों पर भी मैं आत्मा हूँ परिवार वाले आत्मा हैं, एक-एक के नाम से दीवारों में भी यह पाठ पक्का किया डायरियां भर दी-मैं आत्मा हूँ यह भी आत्मा है, यह भी आत्मा है। आपने आत्मा का पाठ इतना पक्का किया है? मैं सेवाधारी हूँ, यह पाठ कुछ पक्का लगता है लेकिन आत्मा सेवाधारी हूँ, तो जीवनमुक्त बन जायेंगे।* रोज़ शरीर में ऊपर से अवतरित हो, मैं अवतार हूँ इस शरीर में अवतरित आत्मा हूँ फिर *युद्ध नहीं करनी पड़ेगी। आत्मा बिन्दू है ना? तो सब बातों को बिंदु लग जायेगा। कौन सी आत्मा हूँ? रोज एक नया-नया टाइटल स्मृति में रखो।* आपके पास बहुत से टाइटल की लिस्ट तो हैना। रोज़ नया टाइटल स्मृति में रखो कि मैं ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हूँ। सहज है या मुश्किल है? आत्मा बिन्दु रूप में रहेगी, तो ड्रामा बिन्दु भी काम में आयेगा और समस्याओं को भी सेकण्ड में बिन्दु लगा सकेंगे और बिन्दु बन परमधाम में बिन्दु जायेगी।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- श्रीमत पर सबकी तकदीर जगानी है,पावन बनने की युक्ति बतानी है"*

➳ _ ➳ मै आत्मा मीठे बाबा को अपने दिल की बात सुनाने के लिए झोपडी में पहुंचती हूँ... *एक पिता का विशाल ह्रदय देख देख अभिभूत हूँ.*.. कि बच्चे संगम पर भी अथाह सुखो में... और सतयुगी दुनिया के वैभव भी बच्चों के ही लिए है... और पिता झोपडी में बेठा, मुझे सुखो के अहसासो में भिगो रहा है... *बच्चे सदा के लिए सुख भरी दुनिया के मालिक बनकर, सदा अनन्त खुशियो में चहके.*.. इन्ही जज्बातों में डूबा मेरा अलौकिक बाबा कितना निर्माण, कितना निर्विकारी, और निरहंकारी है... सब कुछ सिर्फ बच्चों के सुख के लिए... और *बच्चों के सम्पूर्ण पावन बनने के इंतजार में बेठा... मेरा बाबा कितना मीठा और प्यारा है.*.. मीठे बाबा के लिए दिल में अथाह प्यार लेकर, मै आत्मा... झोपडी में प्रवेश करती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को विश्व कल्याण की भावनाओ से सजाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... सबके जीवन में आप समान खुशियो की बहारो को सजाओ... *ईश्वर पिता को पाकर, जो सच्चे अहसासो को आपने

जिया है... उनकी अनुभूति हर दिल को भी कराओ.*.. उनका भी सोया भाग्य जगाकर, आनन्द के फूलो से दामन सजाओ... सबको पतित से पावन बनाकर देवताई राज्य भाग्य दिलाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के अमूल्य ज्ञान को बुद्धि में समेटकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपकी यादो की छत्रछाया में पलकर, असीम खुशियो की मालिक बन गयी हूँ.*.. यह खुशियां हर दिल पर उंडेल कर, उन्हें भी आप समान भाग्यशाली बना रही हूँ... सबको पावनता भरी सुंदर राहो पर चलाकर... सुख के बगीचे में पहुंचा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को दिव्य गुणो और शक्तियो से भरकर कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता की यादो में गहरे डूबकर,श्रीमत के हाथो में अपना हाथ देकर... सबको श्रेष्ठ जीवन का मालिक सजाओ... *मीठे बाबा ने जो अपने प्यार की खुशबु में पावनता से सुगन्धित किया है... आप भी पावन बनने की खशबू हर दिल तक पहुँचाओ.*.. सबको पावन बनने की युक्ति बताकर, सच्चे सुखो से दामन सजा आओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे प्यारे बाबा मुझ आत्मा के उज्ज्वल भविष्य को सजाने में खपते हुए देख कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे दुलारे बाबा मेरे... मै आत्मा आपके अथाह प्यार को पाकर, प्रेम, सुख, शांति की तरंगो से भर गयी हूँ... सबको ईश्वरीय राहो का राही बनाकर... दुखो के दलदल से बाहर निकाल रही हूँ... *सुख भरे फूलो को खिलाकर, अधरों पर मीठी मुस्कान सजा रही हूँ.*..

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने महान भाग्य के नशे से भरते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *ईश्वर पिता जो धरती पर अथाह खजानो को ले आया है... इस दौलत से हर दिल को रूबरू कराओ.*.. सबको प्यारे बाबा से मिलवाकर, जनमो के दुखो से छुटकारा दिलवाओ...श्रीमत की सुखदायी छाँव में, पावन दुनिया का मालिक बनाओ... सबकी सोयी तकदीर को जगाकर, असीम खजानो का मालिक बनाकर, दिव्यता से भर आओ...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से महा धनवान् बनकर पूरे विश्व में इस ज्ञान धन की दौलत लुटाकर कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... मै आत्मा आपसे पायी अथाह धन सम्पद्दा को... अपनी बाँहों में भरकर, हर दिल को आपकी ओर आकर्षित कर रही हूँ... *मुझे इस कदर प्यारा बनाने वाले, पिता की झलक, अपनी रूहानियत से सबको दिखा रही हूँ.*.. और आपकी बाँहों में पालना दिलवाकर, पुनः पावन बना रही हूँ..."मीठे बाबा को दिल के सारे जज्बात सुनाकर मै आत्मा... अपने कर्म के बीच पुनः लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- निंदा करने वाले का संग कभी भी नही करना है*"

➳ _ ➳ "संग तारे, कुसंग बौरे" मुरली में आने वाली इस कहावत को स्मृति में ला कर मैं विचार करती हूँ कि आज दिन तक आसुरी दुनिया के आसुरी मनुष्यों का संग करते - करते मेरी बुद्धि कितनी मलीन हो गई थी जो अपने ही आत्मा भाईयों के गुणों को ना देख उनके अवगुणों को देख उनकी निंदा करने लगी थी। किन्तु *भगवान बाप ने आ कर, अपना सत्य संग देकर, मुझ पत्थर बुद्धि को पारस बुद्धि बना दिया। ज्ञान का दिव्य चक्षु दे कर, मुझ आत्मा को होली हंस बना कर, अवगुण रूपी पत्थर को छोड गुण रूपी मोती चुगना सिखा दिया*।

➳ _ ➳ ऐसे होली हंस बनाने वाले अपने प्यारे मीठे शिव बाबा का शुक्रिया अदा करने के लिए, अब मैं अपने निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप में स्थित होती हूँ और *मन बुद्धि की उस मीठी रूहानी यात्रा पर चल पड़ती हूँ जो सीधी मुझे मेरे ज्ञान सूर्य अति मीठे, अति प्यारे, सिकीलधे बाबा तक ले जाती है*। मन

बुद्धि की यात्रा पर चलते, अनेक सुंदर, अद्भुत अनुभूतियाँ करते, मैं अपने निराकार बाबा के पास उनकी निराकारी दुनिया की ओर बढ़ रही हूँ।

➳ _ ➳ आकाश मण्डल को पार करके, सूक्ष्म लोक को पार करते हुए अब मैं स्वयं को अपनी रूहानी मंजिल के बिल्कुल समीप अनुभव कर रही हूँ। *मेरे शिव पिता की शक्तिशाली किरणों का एक दिव्य आभामंडल मुझे मेरे चारों और दिखाई दे रहा है*। इस आभामंडल के बिल्कुल बीचों - बीच गहन आनन्द की अनुभूति करते हुए मैं अपने शिव पिता के अति समीप जा रही हूँ। *समीपता की इस स्थिति में सिवाय दो बिंदुओं के और कुछ भी मुझे दिखाई नही दे रहा*। मेरे अति समीप ज्योति बिंदु शिवबाबा और उनके बिल्कुल सामने मैं ज्योति बिंदु आत्मा।

➳ _ ➳ अपने निराकार ज्योति बिंदु बाबा की किरणों के साये में मैं स्वयं को देख रही हूँ। उनकी शक्तिशाली किरणों रूपी बाहों में समा कर मैं उनकी सर्वशक्तियों को स्वयं में भरता हुआ महसूस कर रही हूँ। *बाबा की शक्तिशाली किरणों का तेज प्रवाह निरन्तर मुझ आत्मा में प्रवाहित हो कर, मुझे भी बाप समान बना रहा है*। सर्वशक्तिवान बाप की सन्तान स्वयं को मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के रूप में देख रही हूँ और स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ। *परमात्म संग का रंग स्वयं पर चढ़ा हुआ मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर करके और अपने शिव पिता परमात्मा के अविनाशी संग के रंग में स्वयं को रंग कर अब मैं वापिस साकारी दुनिया की ओर लौट रही हूँ । मेरे शिव पिता परमात्मा के अविनाशी संग का रंग अब मुझे आसुरी दुनिया के आसुरी मनुष्यो के संग से दूर कर रहा है। *आसुरी दुनिया और आसुरी मनुष्यों के बीच रहते हुए भी उनकी आसुरी वृति का अब मुझ पर कोई प्रभाव नही पड़ता*। निंदा, चुगली करने वालों के संग से दूर, केवल अपने शिव पिता परमात्मा के संग में सदा रहते हुए अब मैं सदा परमात्म प्रेम की मस्ती में खोई रहती हूँ और हर प्रकार के कुसंग से बची रहती

हूँ।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं प्रत्यक्षता और प्रतिज्ञा के बैलेन्स द्वारा सर्व को बाप की ब्लैसिंग प्राप्त कराने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं विजयी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव लवलीन स्थिति का अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा स्मृति-विस्मृति के युद्ध में समय गंवाने से सदा मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं निरंतर योगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन *बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें*, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है।

➳ _ ➳ 2. ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। *तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है*। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ है। बाबा के रथ को खिलाता हूँ, मैं खाता हूँ, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है। *कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है*। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं, माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। *इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज नहीं किया*। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। *सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है*। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। *सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा*। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य।

➳ _ ➳ 3. *साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना*! पास

विद आनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति।

✺ *ड्रिल :- "ब्रह्माबाप समान बेहद की वैराग्य वृत्ति का अनुभव करना"*

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप समान बेहद की वैराग्य वृति धारण करने का दृढ़ संकल्प मन में लिए मैं लाइट का सूक्ष्म शरीर धारण कर फरिश्ता बन पहुंच जाता हूँ सूक्ष्म वतन... *मेरे संकल्पों को पहले ही कैच कर चुके अव्यक्त ब्रह्मा बाबा में विराजमान शिव बाबा मुझे देखते ही अपनी बाहें फैला कर मुझे गले से लगा कर कहते हैं, आओ मेरे बच्चे:- "साकार ब्रह्मा बाप की गोद का सुख लेने आये हो"!* यह कह कर बाबा मुझे अपनी गोद में बिठा लेते हैं... बाबा की गोद में बैठते ही मैं जैसे एक छोटी बच्ची बन जाती हूँ और बाबा के साथ मधुबन में उस स्थान पर पहुंच जाती हूँ जहां ब्रह्मा बाबा ने दादियों के साथ 14 साल कठोर तपस्या करके इस स्थान को ऐसी तपोभूमि बना दिया कि *इस तपोभूमि पर पैर रखते ही हर मनुष्य आत्मा को गहन शांति की अनुभूति स्वत: ही होती है...*

➳ _ ➳ अब मैं देख रही हूँ स्वयं को इस तपोभूमि पर... यहां पहुंचते ही ब्रह्मा बाबा की वो सभी साकार यादें स्मृति में ताजा हो उठती है जो दीदी, दादियों ने ब्रह्मा बाबा के साथ अपने अनुभवों में कही हैं... *उन साकार यादों की स्मृति मुझे भी साकार पालना का अनुभव कराने लगती हैं*... उस खूबसूरत एहसास में मैं खो जाती हूँ... मेरी आँखों के सामने ब्रह्मा बाबा के हर कर्म का सीन स्पष्ट हो रहा है जिसमे ब्रह्मा बाप की बेहद की वैराग्य वृति की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही है...

➳ _ ➳ बाबा के हर कर्म को मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूं... कैसे ब्रह्मा बाबा ने अपना तन - मन - धन ईश्वरीय यज्ञ में समर्पित कर दिया... *तन के लिए मुख से सदा यही बोल निकला कि मेरा शरीर नही है, शिव बाबा का रथ है*... मन में भी सिवाए शिव बाबा के दूसरा कोई नही था... धन के लिए भी बाबा के मन में कभी यह संकल्प नही आया कि यज्ञ में मेरा धन लग रहा है... *मुख से सदा यही निकला कि शिव बाबा का भंडारा है, भोलेनाथ का भंडारा है*... अपना सारा धन कन्याओं, माताओं को विल कर ईश्वरीय सेवा में लगा

दिया, अपने प्रति एक चीज भी यूज़ नही की... समय, संकल्प, श्वांसों को भी बेहद के वैरागी बन कर सफल किया... किसी भी चीज में कोई ममत्व, कोई लगाव नही रखा... सब कुछ होते हुए भी हर चीज से उपराम रहे...

➳ _ ➳ बाबा के हर कर्म में उनकी वैराग्य वृत्ति की छाप का मुझे स्पष्ट अनुभव हो रहा है... *उनके हर कर्म को देख कर मैं मन ही मन दृढ़ संकल्प करती हूं कि अब बस मुझे ब्रह्मा बाप समान बेहद का वैरागी बनना है*... इस संकल्प को दृढ़ता से मन में धारण करके जैसे ही मैं बाबा की ओर देखती हूँ... बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख कर मुझे "ब्रह्मा बाप समान बेहद के वैरागी भव" का वरदान देकर मेरे मस्तक पर विजय का तिलक लगा देते हैं... *बाबा से वरदान ले कर, विजय का तिलक लगाए मैं फरिश्ता अब अपने ब्राह्मण स्वरूप में लौट आता हूँ*...

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप समान बनने का लक्ष्य मन में लिए, अपने ब्राह्मण जीवन में अब मैं ब्रह्मा बाप के हर कर्म को फॉलो कर रही हूँ... *मेरा यह ब्राह्मण जीवन केवल ईश्वरीय सेवा अर्थ मुझे मिला है, इस बात को स्मृति में रख मैं अपना तन- मन - धन ईश्वरीय सेवा में सफल कर रही हूं*... चलते - फिरते, खाते - पीते हर कर्म करते मन में केवल एक शिव बाबा की याद है...

➳ _ ➳ देह, देह की दुनिया, देह के सम्बन्धो, पदार्थो में अब मेरा कोई ममत्व नही है... सर्व सम्बन्धो का सुख शिव बाबा से लेते हुए मैं जैसे सबसे उपराम हो गई हूं... *ब्रह्मा बाप समान देह और देह के सम्बन्धो के विस्तार को समेट कर सबको आत्मिक स्वरूप से देखने के अभ्यास ने मुझे मरजीवा बना दिया है*... इस देह में रहते स्वयं को मेहमान समझ, सर्व सम्बन्धो से मैं नष्टोमोहा हो गई हूं...

➳ _ ➳ मन में अब केवल यही अनहद नाद गूंजता रहता है "दिल का अब संकल्प यही है, बाबा तुमसा बनना ही है..." और *इस संकल्प को पूरा कर, ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण बनने के लिए बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण कर, पास विद ऑनर का सर्टिफिकेट लेना ही अब मेरे जीवन का लक्ष्य है*...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔